शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

समाचार पत्रों की सामाजिक भूमिका

डॉ. चन्द्रकला चौहान
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय
उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

किसी भी देश का महत्वपूर्ण संचार माध्यम समाचार पत्र होता है। इसकी उपयोगिता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है की विश्व में निरंकुश सत्ता का अंत करने में समाचार पत्रों की भूमिका मुख्य रही है। भारत में डेढ़ सौ वर्षों का पूरा स्वाधीनता संग्राम और राष्ट्रीय जन-जागरण आन्दोलन समाचार पत्रों के माध्यम से ही संचालित हुआ। प्रस्तुत शोध पत्र में समाचार पत्रों की सामजिक भूमिका पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

मानव-समाज में पत्रकारिता का अत्यंत महत्व है, क्योंकि यह समाज की गतिविधियों का आईना है। इसमें सभ्यता, संस्कृति, परम्परा मूल्य और मानवता के स्वर पाते हैं। पत्रकारिता रूढ़ियों, विसंगतियों और विद्रूपताओं के अंत का सशक्त माध्यम है। यह खान-पान, रीति-रिवाज, रहन-सहन से सम्बद्ध विवरण भी प्रस्तुत करती है। यह जन-मानस को जाग्रत और शिक्षित करती है। यह जातीय और धार्मिक समभाव की अधिष्ठापिका है। विषम सामाजिक स्थितियों का सूक्ष्म निरूपण और प्रस्तुतीकरण पत्र-पत्रिकाओं में ही समय-समय पर होता है। बदलते हुए परिवेश में मानव सम्बन्धों की जटिलताओं के कारणों, प्रतिक्रियाओं और परिणामों को विश्लेषित करने की दृष्टि से भी पत्रकारिता की महत्ता है। घटना-परिघटनाओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत कर पत्रकारिता समाज का मार्ग-दर्शन और जाग्रत करती है। प्रगति एवं समृद्धि का मार्ग भी प्रशस्त करती है। जीवन को पूर्ण बनाने का कार्य पत्रकारिता ही संपादित करती है। यह लोक-संस्कृति, मूल्य शिक्षा का सफल माध्यम भी है। यह सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों की संरक्षिका भी है। उपभोक्तावादी-उपयोगितावादी अपसंस्कृति से ग्रस्त मानव-समाज की मुक्ति के लिए प्रेरित करती है। नैतिकता और मानवता की महत्ता का प्रतिपादन पत्रकारिता ही करती है। डॉ. शंकर दयाल शर्मा के मत में "पत्रकारिता लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठापिका, संरक्षिका और मातृत्व की प्रेरिका है।"1 राष्ट्र में घटने वाली सभी घटनाओं का विवरण देकर पत्रकारिता चिंतन के लिए प्रेरित करती है। पत्रकारिता सृजनात्मक शक्ति प्रदान करती है। यह मानव-जीवन की मार्ग-दर्शिका, जीवन-निर्मात्री और सामाजिक मूल्यों की विधायिका भी है।

समाचार पत्रों की सामाजिक भूमिका

पत्रकारिता जीवन के विभिन्न तथ्यों, सत्यों, मूल्यों और मापदंडों की खोज करती है। परिमार्जन का मार्ग प्रशस्त करती है और उनका मूल्यांकन-पुनर्मूल्यांकन कर युग-सापेक्ष इयत्ता भी प्रदान करती है। यह कार्य मुखबीरी या जासूसी है लेकिन इसमें लोक-हित निहित होता है। पत्रकारिता में नीर-क्षीर विवेक का महत्व है, इसलिए तटस्थता, पारदर्शिता और निष्पक्षता

पत्रकारिता के प्राण तत्व हैं। विवेक संबलित सत्व-असत्व, मूल्य-अमूल्य, नैतिकता-अनैतिकता का निर्धारण भी पत्रकारिता की महत्ता का मूल है। डॉ. रामचन्द्र तिवारी का कहना है, "पत्रकार भविष्य दृष्टा होता है। वह समस्त राष्ट्र की जनता की चित्तवृत्तियों, अनुभूतियों और आत्मा का साक्षात्कार करता है। पत्रकार किसी को ब्रह्मज्ञानी नहीं बना सकता, परन्तु मनुष्य की भांति जीते रहने की प्रेरणा देता हैं। जहाँ उसे अन्याय, उत्पीड़न, प्रवंचना, भ्रष्टाचार, कदाचार दिखाई देता है, वह उनका ताल ठोककर विरोध करता है, आत्मविश्वास और दृढ़ता से प्राणी में शांति एवं सद्भाव की स्थापना करता है। सच्चा पत्रकार निर्माण-क्रांति की लपटों से समाज की बुराईयों को भस्म करने का आयोजन करता है। पत्रकार ऐसे समाज का विधिवत विकास करता है। पत्रकार ऐसे समाज का विधिवत् विकास करता है, जिससे आत्मसाक्षात्कार के इच्छुक लोगों को अपनी पहचान करने की दृष्टि मिलती है। पत्रकारिता भाव, विचार, कला, संस्कृति इत्यादि की अभिव्यक्ति का माध्यम है। रेडियो, दूरदर्शन, फैक्स, टेलेक्स, वायरलेस, दूरभाष, इंटरनेट, टेलीप्रिंटर के माध्यम से यह सशक्त सम्प्रेषण करने में सक्षम है।"2 यह समाज में कुशल चिकित्सक भी है। गहन अध्ययन, विश्लेषण, विवेचन और मूल्यांकन के द्वारा जीवन सत्य एवं मूल्यों का साक्षात्कार कराने में समर्थ है पत्रकारिता। यह समाज में हो रहे उतार-चढ़ाव, सृजन-उत्कर्ष को बिम्बित-प्रतिबिम्बित करती है।

उदात्त मूल्य

पत्रकारिता मूल रूप से उदात्त मूल्यों पर आधारित पेशा है। देश इस समय विभिन्न तरह के आर्थिक, सामाजिक और वाणिज्य दबावों से गुजर रहा है। ऐसे में समस्याओं से जूझ रहे देश को उबारने का दायित्व पत्रकारों पर है। आज पत्रकारिता का एक स्तर बनाए रखने वाले तथा समाज को एक स्वस्थ दिशा देने वाले मेहनती, ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ ऐसे युवाओं की बहुत आवश्यकता है, जो कि पत्रकारिता के पवित्र पेशे की गरिमा को बनाकर रखें, अन्याय का प्रतिकार करें तथा संपूर्ण मानवता एवं राष्ट्रहित के हित में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर आदर्श प्रस्तुत करें। पत्रकारिता एक जिम्मेदारी पूर्ण कार्य, जनसेवा व एक साधना है, यह तकलीफों का वरण भी है। आज अपनी अंतरात्मा की आवाज पर चलने वाले तथा अपने सिद्धान्तों से समझौता न करने वाले पत्रकारों की महती आवश्यकता है। वरिष्ठ पत्रकार पं. कमलापति त्रिपाठी का कथन है कि, "भारतीय पत्रकार के लिए उसका पेशा केवल पेशा ही नहीं है बल्कि एक उज्जवल ध्येय के लिए उत्सर्ग और साधना का कठोर किन्तु पवित्र पथ भी है। पत्रकार आज जो अपनाना चाहते हैं उन्हें आज इसी दृष्टिकोण से अपनाना चाहिए। भारतीय पत्रकार का पथ पैसा कमाने का मार्ग नहीं, अपितु उस वीर और तेजस्वी योद्धा का संघर्ष स्थल है, जो किसी महान लक्ष्य की सेवा में सर्वस्व की बाजी लगाने के लिए आगे बढ़ता है। उसे विशाल भारतीय राष्ट्र की वर्तमान क्रांति का अग्रदूत भी बनना है जो राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक अंग में नवबल, नवजीवन तथा नए ओज का संचार करेगी। अपने आदर्शों के लिए आधुनिक पत्रकार को जीना है उन्हीं के लिए मरना है।"3

लोकतंत्र का सजग प्रहरी

पत्रकारिता लोकतंत्र एवं मानव-मूल्यों की सजग प्रहरी एवं संरक्षिका है। स्वतंत्रता, अस्मिता, एकता, अखण्डता, साम्य, न्याय, सहकर्म, सहभोग

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

के मार्ग को प्रशस्त करती है पत्रकारिता। आज पत्रकारिता को जनतंत्र के चतुर्थ स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। यह राष्ट्रीय भावना एवं जनमत को बनाने का कार्य संपादित करती है। न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका के कार्य-कलापों, नियम परिनियमों, विधि-विधानों का प्रकाशन एवं प्रसारण तो यह करती ही है, चरित्र-निर्माण एवं नैतिकता सम्मिलित करने में सहायता भी प्रदान करती है।

पत्रकारिता वर्तमान युग की मार्ग-निर्देशिका है। शिक्षा, संस्कृति, व्यापार, सामाजिक, पारिवारिक मूल्यों से यह जनमानस को जोड़ती है और रोजगार-सेवा का विज्ञापन प्रकाशित कर युवाशक्ति को अर्थोपार्जन के अवसर प्रदान करती है। जीवन को प्रतियोगी और स्पर्धात्मक बनाने का कार्य भी पत्रकारिता करती है। पत्रकारिता प्रजा एवं सत्ता के बीच सेतु का कार्य करती है। यह दोनों के कार्य-कलापों के विनिमय का माध्यम है। मत-अभिमत योजना परियोजनाओं के प्रसारण से जनता अवगत होती है। स्वीकृति-अंगीकृति के धरातल पर पक्ष-विपक्ष को स्वर प्रदान करना भी पत्रकारिता का ही कार्य है। समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ किसी भी देश के नीति-निर्धारण एवं उसे मूर्त रूप देने वाला एक शक्तिशाली माध्यम है। पत्रकारिता प्रेस-सूचना देने और शिक्षा-प्रसारण के साथ-साथ शासन और जनता के मध्य एक सार्थक सम्पर्क विकसित करती है।

साहित्य में व्यवसायिकता के मूल्य साधारणतः प्रतिष्ठित नहीं हो पाते परंतु पत्रकारिता में वह तेजी से प्रतिष्ठित होते जा रहे हैं। इसलिए भी शायद साहित्य के स्थाई मूल्य की तरह पत्रकारिता के स्थाई मूल्य की बात नहीं उठती परंतु जो पत्रकारिता उच्चतर मूल्यों के साथ सदैव संलग्न रही वह हमेशा उतनी ही महत्वपूर्ण रही, जितना साहित्य प्रख्यात पत्रकार श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ने लिखा है कि '"हमारा काम यह नहीं कि विशाल देश में बसे चन्द दिमागी एय्याशों का फालतु समय चैन से काटने के लिए मनोरंजन साहित्य का मयखाना हर समय खुला रहे। हमारा काम तो यह है कि वह विशाल देश में फैले। जन साधारण के मन में विश्रृंखलित वर्तमान के प्रति विद्रोह और भव्य भविष्यत के निर्माण की श्रमशील भूख जगाये।"4

पत्रकारिता ने अपने आरंभिक समय से ही सभी संकट व कष्ट झेलकर भी अपने मूल्यों की रक्षा की। इस भौतिकवादी जगत में अपने अस्तित्व को व्यावसायिकता के आवरण से बचाते हुए चलना सहज नहीं था। पत्रकारिता ने सदा अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाई। अंग्रेजों के दमन चक्र के बीच भी पत्रकारिता शान से सिर उठाए खड़ी रही। किसानों के हित का प्रश्न हो या नए कानूनों की आड़, पत्रकारिता ने प्रत्येक अन्याय को न्याय दिलाने का भरसक प्रयत्न किया।

पत्रकारिता का एक मूल्य था, राष्ट्र के प्रति अनन्य प्रेम यदि सही मायने में देखें तो पत्रकारिता ने ही राष्ट्र प्रेम की भावना को लोगों के दिलों तक पहुँचाया। अंग्रेजी शासन की क्रूरता के पंजे में कसे भारतीय चाहकर भी अपने देश-प्रेम संबंधी भावों को अभिव्यक्त नहीं कर पाते थे, परंतु राष्ट्रीयता का प्रचार करने वाले पत्रों ने उनके मूक स्वर को वाणी दी। अनेक पत्रकारों ने स्वाधीनता आंदोलन व संपादक ने देश के लिए जेल जाना अपना गौरव समझा। भारतीय नवयुवकों के जागरण हेतु अनेक महापुरूषों ने समाचार-पत्रों का सहारा लिया जिसका देशव्यापी प्रभाव हुआ।

मूल्यों में परस्पर प्रतिस्पर्धा चलती रहती है। मूल्यों के इस निरन्तर टकराव के बीच मनुष्य तथा समाज मूल्यों के एक संस्तरण को विकसित कर लेते हैं। जिसके अन्तर्गत साध्य मूल्यों को साधन मूल्यों से उच्च स्तर प्रदान किया जाता है। आदिकालीन साहित्य भक्तिकालीन साहित्य और रीतिकालीन साहित्य में उक्त मूल्यों की स्पर्धा दृष्टव्य है। स्वच्छंदतावादी साहित्य जहाँ मानवीय मूल्यों का प्रतिष्ठापरक है, वहाँ प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी साहित्य साधन मूल्यों को जीवन का सार घोषित करते है। पत्रकारिता पर जनवाद एवं साम्यवद के नाम पर वर्चस्व स्थापन भौतिक मूल्यों के संरक्षण के लिए ही किया जाता है।

"उनके मूल्य एक दूसरे के साथ संघर्ष करते रहते है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपनी शिक्षा एवं अनुभव के आधार पर संस्थाओं, सामाजिक आदर्श नियमों द्वारा निर्देशित होकर उपयुक्त मूल्यों को चुनता है। मूल्य के पारस्परिक संघर्ष के कारण व्यक्ति कार्य-विधियों के विकल्प को ढूँढता है, जिसके परिणामस्वरूप मूल्यों का विवेक पूर्ण प्रतिपादन होता है। यह विवेक साहित्य पत्रकारिता से मनुष्य को प्राप्त होता है, जो मूल्यों के मूल्यांकन-पुनर्मूल्यांकन का कार्य संपादित करती है।"5

समाज या संस्कृति मनुष्य का मूल्यों के आधारभूत प्रतिमान प्रदान करती है। समस्त मानवीय इच्छाएँ सामाजिक आवेगों के साथ संपृक्त रहती है। मानवीय मूल्य मनुष्य के सामाजिक सम्बन्धों का द्योतक या प्रतिरूपक है। यह संस्कृति परम्परा और प्रशिक्षण ही है जो आधारभूत मूल्य व्यवस्थाओं का सृजन करते हैं और इन्हें सामाजिक साध्य तथा लक्ष्यों के साथ गुँथते हैं जो कि मूल्यों की परितृप्ति की प्रकृति और विधि को नियमित करते हैं। परितृप्ति की प्रकृति और विधि का परिसीमन एवं नियंत्रण साहित्य पत्रकारिता के माध्यम से करते है। संस्कृति परम्परा और प्रशिक्षण को नव्य ऊर्जा पत्रकारिता ही प्रदान करती है।

निष्कर्ष

पत्रकारिता ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा समाज में नए आचार-विचार और व्यवहार को गति मिलती है। हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, मत्स्यक्रांति को सफल बनाने में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। विज्ञान, चिकित्सा, राजनीति, कृषि एवं संस्कृति संबंधी मान्यताओं को पत्रकारिता के जरिए ही परिवर्तित अथवा संशोधित किया जा सकता है। यही एक ऐसा साधन है जो देश, दुनिया को परस्पर जोडे रखता है जो नवीन दृष्टि देता है। पत्रकारिता का दायित्व समाज को सत्यान्वेषण करना है, मूल्य और मापदंडों का प्रकाशन एवं प्रसारण करना है। पत्रकारिता समाज से नियंत्रित है और समाज पत्रकारिता से निर्देशित एवं उन्नति के लिए प्रेरित है। दोनों का परस्पर दायित्व है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 हिन्दी पत्रकारिता का समकालीन विमर्श, डॉ. शिवनारायण, डॉ. सिद्धेश्वर काश्यप, पृष्ठ 15

2 हिन्दी पत्रकारिता का समकालिन विमर्श, डॉ. शिवनारायण, डॉ. सिद्धेश्वर काश्यप, पृष्ठ 18

3 समाचार-पत्र प्रकाशन एवं संचालन, रोहिताश कुमार 'विक्की', पृष्ठ. 9

4 पत्रकारिता के मूल सिद्धांत, नवीन चंद पंत, पृष्ठ 13

5 पत्र और पत्रकारिता, रचना भोला 'यामिनी' पृष्ठ 14